सं ग्रो.वि. एफ डी 88-84 38432 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. वैलाम टैक्सटाईल इण्डस्ट्रीज 3 3, सोहना रोड, बल्लबगढ़ के श्री डाल् राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

म्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौचीगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तायों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 5415—3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये श्रिवसूचना सं 11495-श्रम84-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिवियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा गामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री डालू राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. म्रो. वि/एफ डी./88-84/38489 -चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मै. कैलाश टैक्सटाईल इण्डस्ट्रीज, 3/3, सोहना रोड, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री हरी सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

म्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई फहित्यों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495—श्रम84-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है;

क्या श्री हरी सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

बी. पी. सहगल,

संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।

≯

श्रम विभाग

ऋादेश

दिनांक 23 सितम्बर, 1984

सं० थ्रो.वि./सोनीपत/87-84/36633.— चूंकि हरियाणा के राज्यणल की राय है कि मैं. सिगमा रवड़ प्रा० लि०, कुन्डली, सोनीपत के श्रमिक श्री स्थाम लाल-I तथा उसके प्रवन्छकों के बीच इसमें इसके बाद लिखिन अग्येत में कोई प्रौद्योगिक विवाद हैं;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्याय निर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीकोशिक विवाद ग्रिधितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की. गर्ड शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641-1-अम- 70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3864-ए-ग्रो.(ई)-श्रम- 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उपत ग्रीधितियम, की द्वारा 7 के ग्रीमिन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिन ग्रीस

हेर्तुं निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो निजादणस्त मामला है. य' उक्त निजाद से सुसंगत या संबंधित भामला है:---

क्या भी श्याम लाल-] की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री. वि./सोनीपत/86-84/36640. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कि सिगमा रवड़ प्रा० लि०, कुन्डली, सोनीपत के श्रीमक श्री जय प्रकाश तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्री द्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, स्रव, श्रीद्योगिक वित्राद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गृह्र शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 96411-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए. श्रो.(ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा कुँउक्त श्रिधिनियम की घारा 7 के श्रधोन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री जय प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ओ विव | सो नोयत | 85 - 81 | 36647 - - बूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व सिगमा रवड़ प्राव् लिय, कुन्डली, सो नीपत के श्रमिक श्री येव चन्द तथा उसके प्रवत्यकों के थीच इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री द्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपद्यारा (1) क खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्ड शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं∘ 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 नत्रम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं∘ 3864-ए-ग्रो.(ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

च्या श्री देव वर्द की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो०वि०/सोनीपत/83-84/36654 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सिगमा रवड़ प्रा० लि०, कुन्डली, सोनीपा के श्रमिक श्री राम लगन तथा उसके प्रवत्यकों के बोच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्याल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद सिशिनियन, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं 9641-1-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रीधसूचना सं 3864-ए०श्रो०(ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगम था उससे सबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिणंय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवस्थकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम लगन की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?